अगले साल भी लीची पर होगा फली बेधक का वार

- लीची के कोमल कलश पर होने लगा आक्रमण
- 18 हजार हेक्टेयर में किसानों ने लगा रखी है लीची
- कीट विज्ञान विभाग के फेल होने का आरोप
- केंद्र व राज्य सरकार नहीं बन सके किसानों के हमदर्द
- लीची की खेती कर किसान होंगे नुकसान के हकदार
- सरकार ने उपलब्ध नहीं करायी बचाव संबंधी जानकारी
- राष्ट्रपति को भी नहीं गई थी जिले से शाही लीची

प्रेम, मुजफ्फरपुर

लीची किसानों को बरबादी से चैन नहीं है. लीची फल के साथ जमीन पर गिरे फली बेधक कीड़े अगले वर्ष के लिए अपना वंश तैयार कर लिया है. यह कीड़ा फिलहाल लीची बागों की जमीन में है. अब हरी पत्तियों पर आक्रमण कर रहा है. यह उन पत्तियों पर अपना अड्डा जमायेंगे, जो मुलायम होंगे. पौधा संरक्षण से जुड़े विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि यह कीड़ा जलवायु के अनुकूल भी अपने आपको ढाल लिया है. मौसम भी इसके अनुकूल है. अगले वर्ष फिर किसानों को करोड़ों का नुकसान होगा. हद तो यह है कि केंद्र व राज्य सरकारों ने अगले वर्ष भी फल बचाव पर कोई काम नहीं किया है. उद्यान विभाग के आंकड़ों पर गौर करें तो जिले में 18 हजार हेक्टेयर में लीची के पेड़ लगे हुए हैं. अधिकांश खेती मुशहरी, मीनापुर, कांटी, मोतीपुर व बोचहां में हैं. इन प्रखंडों के किसान इस वर्ष लीची की खेती कर करोड़ों रुपये नुकसान के हकदार हो गये. किसानों ने डीएम, सीएम व पीएम को पत्र लिख कर अपनी बातों से अवगत कराया. बरबादी का सबसे बड़ा सबूत था राष्ट्रपति को लीची नहीं भेजी गई. जबकि सभी प्रखंडों में टीम गठन कर डीडीसी ने लीची की खोज की थी. इसके बाद भी किसानों का हमदर्द कोई नहीं बना.

किसान नेता भोला नाथ झा बताते हैं कि इस वर्ष किसान तो बरबाद हो ही गये, अगले वर्ष भी आर्थिक रूप से बरबाद होंगे. फ्रूट बोरर री-साइकिल कर गया है. अब हरी पत्तियों पर चढ़ रहा है. लीची अनुसंधान केंद्र का रिसर्च इस मामले में शून्य है. इसका कीट विज्ञान सेक्शन में इस पर कोई रिसर्च नहीं हुआ है. यहां के वैज्ञानिकों ने जिन दवाओं की अनुशंसा की थी, तीन बार स्प्रे किया गया. लेकिन

एक्सक्लूसिव

99 फीसदी फलों में कीड़ा गया है. सरकार को चार्टर्ड ऑफ डिमांड भेजा गया. लेकिन राज्य से लेकर केंद्र ने ध्यान नहीं दिया. दोनों सरकारों का मोहभंग हो गया है. उन्होंने क्लोरोपाइरीफॉस दवा को दाने में बनाने की मांग की है.

बंदरा के सतीश कुमार द्विवेदी व कांटी के मुरलीधर शर्मा बताते हैं कि फ्रूट बोरर का जेनेरेशन तैयार हो गया है. यह कीड़ा लीफ बोरर व लीफ माइनर के रूप में पत्तियों पर हमला करने को तैयार है. अब बागों में पत्तियां मुड़ने, नया कलश गिरने, पत्तियां टूटने की शिकायत आने लगी है. पत्तियां बरबाद करने के बाद ठंड के मौसम में यह फिर जमीन के अंदर डॉरमेन्सी पीरियड में चली जायेगी. फल सेटिंग के 15 दिन बाद डंटल के पास अंडा देगा. फिर फलों के अंदर यह कीड़ा विकसित होगा.

जुलाई में लीची बागान ऐसे करें काम

जुलाई लीची के लिए खास समय है. राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र निदेशक डॉ विशालनाथ ने कहा, इस माह में पेड़ों की कांट छांट व उर्वरक देने की प्रक्रिया को पूरी कर लें. प्रत्येक फल देने वाले लीची के पेड़ में 50 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 4-5 किलो नीम या अरण्डी की खली, 500 ग्राम नेत्रजन, 500 ग्राम फॉस्फोरस, 01 किलोग्राम पोटाश जरूर दें. नयी कोपलों को कीड़ों -मकोड़ों से बचाने के लिए क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी कीटनाशक का छिड़काव 2 मिलीलीटर / लीटर पानी की दर से उपयोग करना बेहतर होगा. ध्यान रखें कि दवा का छिड़काव पूरे छत्रक पर अंदर व बाहर की तरफ से करें. बगीचे में यदि छाल खाने वाले कीड़े का प्रकोप हो तो झाड़ू की सहायता से तने व संक्रमित टहनियों को अच्छी तरह साफ कर मिट्टी के तेल या पेट्रोल में भीगी हुई रुई को छेद में स्पोक (साइकिल की तीली) की सहायता से ठूंस दें.

जमीन में इसका नया जेनेरेशन तैयार हो रहा है. आगे यह पतिंगा बन कर उड़ सकता है. इसकी संख्या को नियंत्रित करने के लिए जमीन में नमी की खल्ली दे सकते हैं. एक कीटनाशी क्लोरोपाइरीफॉस का छिड़काव भी कर सकते हैं. इन दोनों प्रयोग से इस कीट का जन्म दर घटेगा.

डॉ विशालनाथ, निदेशक, राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर.